P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-7* ISSUE-10* June- 2020
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

खनन और समाज : अवधारणायें एवं उपागम

Mining and Society: Concepts and Approaches

Paper Submission: 16/06/2020, Date of Acceptance: 25/06/2020, Date of Publication: 28/06/2020

आर. एस. त्रिपाठी,
प्राध्यापक,
समाजशास्त्र विभाग,
शासकीय महाविद्यालय,
बड़वारा, कटनी, म0प्र0, भारत

दीपमाला तिवारी
शोधार्थी,
समाजशास्त्र विभाग,
रानी दुर्गावती विश्वविद्यालय,
जबलपुर, म0प्र0, भारत

सारांश

प्रस्तुत शोध पत्र खनन और खनिज दोहन में लगे समुदाय की सामाजिक पृष्ठभूमि के विश्लेषण पर आधारित है। अध्ययन का उद्देश्य यह लिया गया कि कॉलरी श्रमिक समाज से भौतिक अलगाव और किस प्रकार के जनसमूह (आइसोलेटेड मॉस) है? द्वितीय खदानों के कार्य में जोखिम, अनिश्चितता और पर्यावरणीय प्रभाव को ज्ञात करना, तृतीय, खनन समुदाय के ठेठ आदर्श प्रतिरूप का स्वरूप किस प्रकार समझा जा सकता है? इस शोध पत्र में खनन और समाज के रिश्ते का विश्लेषण एक व्यावसायिक, संगठित उद्यम में महत्व को देखते हुये भी किया गया। खनन अर्थव्यवस्था में प्रभुत्व या महत्ता आर्थिक योगदान में ऊपर है। श्रमिक जोखिम भरा कार्य सुरंगों में जाकर कोयला निकालने का करते हैं। कोयला खदान श्रमिक सामाजिक जीवन में एकरूपता और अलगाव की स्थिति दोनों के सहभागी हैं। खनन क्रियायें व्यवसाय और उद्योग के रूप में समाज के औद्योगिक ढॉचे से जुड़ी है और प्रभाव डालती है। कोयला खान श्रमिक औद्योगीकरण के प्रारंभ से श्रमबल में महत्वपूर्ण स्थान लिया और राष्ट्रीय कोयला नीति की प्रस्तावना में कोयला खनन श्रमिकों की सुरक्षा और दुर्घटना मुक्त जीवन को प्रावधान और नियम में डाला गया है। अतः समाज और खनन का अर्न्त सम्बंध बहुमुखी और स्थायी उपादेयता का है।

The research paper presented is based on an analysis of the social background of the community engaged in mining and mineral exploitation. The objective of the study was to find out what is the physical separation from the colony workers society and what type of mass is there? Second, to find out the risk, uncertainty and environmental impact in the work of mines; Third, how can the typical model model of mining community be understood? In this research paper, the relationship between mining and society was also analyzed given the importance in a commercial, organized enterprise. Dominance or importance in the mining economy is high in economic contribution. Workers undertake risky tasks in the tunnels to extract coal. Coal mine workers are both partners in a state of homogeneity and isolation in social life. Mining activities are linked to and influence the industrial structure of society in the form of business and industry. Since the beginning of coal mine labor industrialization, the labor force has taken an important place and the preamble of the National Coal Policy provides for safety and accident free life of coal mining workers in the provisions and rules. Therefore, the end relationship between society and mining is multifaceted and permanent utility.

मुख्य शब्द :खनन, कोयला श्रमिक, अनिश्चित कार्य, पर्यावरण, औद्योगिक समरूपताओं का समाज, अलगाव युक्त जनसमूह, श्रम समाजशास्त्र कोयला खनन।

Mining, Coal Labor, Erratic Work, Environment, Society of Industrial Homogeneities, Alienated Population, Labor Sociology Coal Mining.

प्रस्तावना

यह शोध पत्र द्वितीयक आंकड़ों और वैचारिक सिद्धांत संबंधित प्रश्नों को समझने हेतु लिखा गया। गंभीर शोध कार्य इस क्षेत्र में करना जरूरी है। प्रमुख विद्वानों ने जो आधार प्रस्तुत किए हैं उनको लेख में उद्धृत किया गया है। खनन कार्यों में लगी जनसंख्या एक अलग सामुदायिक अस्तित्व का भाग होती है। यह आर्थिक विकास की कड़ी में खनिज संपदा के लिए दोहन कार्य

का जनांकिकीय भाग है। खनिज इसका उत्पाद है और भूमिगत खानें लोकेशन है।

पूर्ववर्ती शोध साहित्य का पक्ष

अधिकांश सैद्धांतिक क्षेत्रीय कार्य यूरोपीय देशों में हुये हैं। खनन और समाज आधुनिक समाजशास्त्रीय विश्लेषण के विषय के रूप में विकसित हो चुका है।

इलीन माउन्टजॉय (2014) ने ब्रिटेन के रोचेस्टर और पिट्सबर्ग कोयला क्षेत्र के जो इनरेस्ट पेंसिलोनिया में स्थित है इसका सर्वेक्षण 1962 में किया था। यह एक छोटा खनिक बस्ती का जीवन रहा जिसमें कंपनी प्रबंधन और मजदूरों का वर्णन है। कोयला खनन का काम 1904 से हो रहा था। यहॉ कई देषों से कोयला खनिक आये थे। जिससे खनिक बस्ती में बहुराष्ट्रीयता का प्रवेष हुआ। स्थानीय संस्कृति और खनिकों का सघन रिष्ता अरनेस्ट टाउन में विकसित हुआ। इस कोयला उत्पादन क्षेत्र में सामाजिक सम्बंधों के सामुदायिक विकास का अवलोकन किया गया।

गिब्सन परॉल (2017) ने समाजषास्त्रीय दृष्टि से कोयला कस्बे के सामाजिक व्यवस्था का इतिहास पर प्रकाष डाला है। जैम तवसम वि बवंस उपदपदह जवूदे पद वबपंस जीमवतल लेख में सैद्धांतिक पक्षों पर शोधकर्ता का योगदान है। उपभोगवाद और पूॅजीवाद के यूरोपीय इतिहास में कोयला खानों का स्थान है। श्रम के संगठन और उद्योग के विकास में कोयला खनन को आगे माना जाता है। औद्योगिक श्रमिक और रोजगार के विभिन्न क्षेत्रों में कार्य की प्रकृति से समझा गया। श्रमिक वर्ग के भीतर प्रवासी श्रमिक और दिहाड़ी अस्थायी श्रमिक (Precarious) का वर्गीकरण है। श्रमिक की आत्मा (Workers Soal) की कल्पना की गयी। कोयला खानों में कामगार के तीन अधिभौतिक रूप हैं। शरीर, आत्मा, दिमाग का भी पुंज है। श्रम करने वाला श्रमिक, अनिश्चित श्रम कार्य के समक्ष कोयला श्रमिक अधिक शारीरिक श्रम करने वाला स्थायी पद और ब्लूकॉलर वर्कर और खदानों में श्रम श्रृंखला (Chain of Work) है, क्योंकि फैक्टरी स्थापना से कोयला खानें और मजदूर बस्ती दोनों के आधार बन जाते हैं, फिर भी कोयला खाने पूॅजीवादी व्यवस्था का भी भाग है। कोयला खान मजदूर बस्ती इस सामाजिक संरचना का मुख्य भाग है जो दूसरे समूहों से अलग जनसमूह है जो (Isolated Mass) के रूप में वर्गीकृत हो जाता है। कोयला खान श्रमिकों की सामाजिक पृष्ठभूमि पर शोधकर्ता ने व्यापक शोधकार्य किये हैं –

जिम फिलिप्स (1900) ने बिट्रेन की कायेला खान श्रमिकों के एक समुदाय का अध्ययन किया है। बिट्रिश शोधकर्ता जिम स्ट्रेगंलमैन (2008) ने महत्वपूर्ण शोध कार्य किया है। किरायक इमासेव (2018) ने खनन उद्योग के बारे में सामाजिक विज्ञानों में किये शोधों की समीक्षा की है। बेनेसा पेटकोवा (2009) ने वोवेन बेसिन कोयला खान मजदूरों के सामुदायिक जीवन को खदानों के विकास के साथ जोड़कर प्रवृत्तियों का वर्णन किया गया। बी.मुनिक (2010) ने अपने शोध कार्य में दक्षिण अफ्रीका की कोयला खानों के पर्यावरण प्रभावों का वर्णन किया है। सुजैन टेलीकॉट (1995) ने खदानों में मजदूरों की बीच श्रम और लैंगिक विभाजन का विश्लेषण किया। व्यवसाय और समुदाय के विकास, अर्न्तसम्बंध का वर्णन जी.सोलोमान (1974), रोजेन वर्ग (1975) के शोध पत्रों का विषय रहा। रिचर्ड गोर्दो (1985) ने दुनिया में कोयला खानों के जरिये विकास का स्थिर पक्ष सामाने रखा। रिचर्ड जेरेमी (2018) ने भी इसी मानवशास्त्रीय पक्ष को सामने रखा।

प्रारंभिक अध्ययन के तौर पर रिचर्ड ब्राउन (1974) के ग्रंथ "दॅ सोशियालॉजी ऑफ इन्ड्रस्ट्री" अत्यन्त गर्भित अध्ययन प्रस्तुत करता है। खनन का सम्बंध पर्यावरण, प्रकृति प्रबंध का वर्णन फिलिप क्राउसब (2018) ने संसाधन अभिशप्त आधुनिक मिथक के तौर पर प्रस्तुत किया। बडें पैमाने पर खनन कार्यों के उपर कई श्रेष्ठ कार्यों का उल्लेख किया जा सकता है। ऐसी चीज जिसका बाजार मूल्य और मांग है जैसे चाय बागान जहां श्रमिक की गहन मांग भी कोयले खनन जैसी मिलती है। इसको एक पेशेवर या व्यवसायिक समुदाय का स्थान है। इन एकनिष्ठ पेशेवर समुदाय को कई विशेषताओं से जोड़ सकते हैं –

1. खनिकों की स्थानीय नातेदारी होना (संबंधी समूह) सामाजिक सम्पर्क,
2. मित्रता एवं अनौपचारिक संपर्क, कॉलोनी वातावरण,
3. खनिकों का क्लब, मनोरंजन गृह,
4. आधुनिक सांस्कृतिक उपादान, संगीत सम्मेलन, बर्थ डे पार्टी, श्रमिक रिटायरमेंट, आदि
5. खनिकों का जन्म स्थान (प्रायः ग्रामीण) खनिक होने के पहले युवा काल तक का विकास,
6. पिता के व्यवसाय स्थल से जुड़ाव, यदि पिता भी खान मजदूर रहे हैं,
7. समान सम्रूपी समुदाय या खनिकों की सामाजिक पृष्ठभूमि।

विश्लेषण का स्तर

	बाह्य परिवेश	आन्तरिक समावेश
सामाजिक संरचना	संस्थायें	सामूहिकतायें
सामाजिक अन्तक्रिया	क्रिया की सामाजिक दशायें	लक्ष्य एवं स्थिति का अर्थ

सामाजिक संरचना के विश्लेषण के लिए कुछ साधन सैद्धांतिक बिंदु तलाशे जा सकते हैं –

1. एक ठेठ आदर्श सर्वहारा वर्ग,
2. अलगाव से निर्मित जनसमाज,
3. औद्योगिक समरूपता एवं सामाजिक–संस्कृतिक मंच,
4. व्यावसायिक समुदाय के रूप में खनन समुदाय

पारम्परिक आदर्श प्रतिरूप

यह खनिज दोहन के लिए प्रशिक्षित समुदाय है जो पूंजी के गठबंधन से एक बड़े भू–भौगोलिक संरचना को खदान में बदलने में कार्य करता है। खनन के कार्य में व्यक्तियों को समुदाय से जोड़ते हुए उत्पादन व्यवस्था तैयार होती है और स्थानीय समुदाय के स्तरीकरण व्यवस्था में एक नये खनन समुदाय की स्थायी वर्गीय स्थिति बन जाती है। खनन मोटे तौर पर पूंजी और श्रम का संयोग है।

खनन अपने खतरनाक और असुरक्षित काम से दूसरे समुदायों से अलग है। खनन समुदाय सीधे नियुक्ति, भर्ती से संचालित होते हैं। यह श्रम बल है जो नियोक्ता, पूंजीपति का नौकरी शुदा है। प्रश्न यह है कि श्रमिकों की हमारे समाज में क्या स्थिति है ? आधुनिक औद्योगिक परिवेश में श्रमिक अपने श्रम नियोक्ताओं को बेचकर केवल उत्पाद तैयार करने वाला रह जाता है। यह सब बाहरी ताकतों की संरचना (श्रम–समाज संरचना) पर प्रभाव है। मजदूर वर्ग एकता का प्रतीक या संचालित इकाई है तो उत्पादन की व्यापक निर्णय और क्रियाएं भी निर्धारक कारक है जो कहीं शोषित को उसके शोषण के मात्रा से परिभाषित होती है। मजदूरी (Wages) इन दोनों छोर (नियोक्ता–मजदूर) के बीच ठेठ आदर्श प्रतिरूप को जन्म देता है और वह सर्वहारा का सृजन भाग है। इस तरह खनन समुदाय और पूंजीपति या खनन मालिक दो वर्ग है। यह खनन मालिकों का विस्तार खनिज दोहन की संभाव्यता से विदेशी पूंजीपतियों तक कार्टेल के रूप में स्थापित हुआ और औद्योगीकृत विश्व में देखा गया है। खनिज दोहन में स्थानीय मानव–श्रमबल जनसंख्या मजदूरी करने को आकर्षित होती है। कई विपरीत शोषणवादी दशाओं को दक्षिण अफ्रीका की खानों में देखा गया। खनन श्रमिक समुदाय के सुदृढ़तावादी विशेषताएं हैं जो आदर्श के रूप में विशिष्ट हैं।

एकाकी जनसमूह

खनन का दूसरे अन्य उद्योग या व्यवसाय में अंतर है बाकी समानतायें, हड़ताल, कार्य की समय, सुरक्षा आदि में अंतर है और समाज में मजदूर या कर्मचारी की समाज में छवि क्या है ? उद्योग की छवि, कर्मचारी की छवि में मिश्रित होती है। उस स्थान पर जब कोई शहर खड़ा हो जाता है, तो यह भी खनन शहर (Mining Town) कही जाती है।

इससे खनन बस्ती (Mining Town) की आन्तरिक सामाजिक छोर पर स्थित की विशेषताएं हैं–

1. अलगाव, एकातिक समाज,
2. समरूपताओं का प्रवाह,
3. सुदृढ़ता,
4. किसी व्यावसायिक सामाजिक गतिषीलता का अभाव।

खनन कार्य विशेष रंग की ड्रेस, भीतर कार्य करने के मषीनी उपकरण और खदान में काम करने की परिस्थितियां इस व्यवसायिक समुदाय की पहचान है। प्रबंधन, मैनुअल वर्कर, फिटमैन जैसे चिन्हित संस्थानात्मक व्यवस्थायें खदान की शुरुआती कार्यों का क्रम है। हड़ताल कोयला खानों में मजदूरों की होती रही है, अन्य उद्योगों के भीतर इससे कहीं अधिक। खानों के भौगोलिक संरचना के अनुसार एकाकी खदान कर्मचारियों का जन समूह है, जो समुदाय के प्रतिबद्ध मांगो की सुदृढ़ता से व्यक्त होता है।

औद्योगीकृत समरूपतायें

औद्योगिक समरूपता खनन कार्य की औद्योगिक विशेषताएं इसके अति विशिष्ट श्रम पेशे का संयोजन है। यह विशेषता खनन उद्योग को दूसरे से अलग करती है। कोयला उद्योग कोयले के बाजार मूल्य और मजदूरी के मुद्दे से अनिश्चितता से भरा उद्योग बना है। मजदूर आपसी भाईचारा दिखाते हैं ताकि उन्हें मजदूरी ठीक से खान मालिकों से मिले। कालरी कॉलोनी के भीतर इसके अवसर हैं कि वह अपनी मजदूर एकता बनाए रखें। कॉलोनी कोयला नगरी के रूप में सामाजिक अंतर क्रिया का प्लेटफार्म भी है, यथा –

1. बाहरी लोगों से अलग कोयला खान की जगह है, केवल नियुक्त कर्मचारी और परिवार,
2. मजदूरों का सभी को एक ही भाग्य मानना,
3. मनोरंजन, भावनाएं, विचार दूसरे उद्योग से अलग,
4. उच्च स्तर की सामूहिकता,
5. अलग औद्योगिक वातावरण और व्यवहार,
6. औद्योगिक मूल्यों को आत्मसात करना।

व्यावसायिक समुदाय

औद्योगिकरण एकांकी परिवर्तन धारक प्रक्रिया नहीं है। इसे नगरीकरण, शिक्षा, मेडिकल की उपलब्धता और राष्ट्रवाद की औद्योगिक क्षेत्र में प्रवृत्त विचारधारा से उद्योग को परिवर्तन का कारक माना गया है।

औद्योगिकरण की अधिक इकाइयां भी जो ग्रामीण समाज के विघटन को लेकर प्रत्यक्ष कही जाती हैं उद्योगवाद में विचारधारा है जो परंपरागत समाज में अधिक गाह्य नहीं होती, परंतु क्रमषः या धीरे–धीरे इसमें कार्य की परंपरागत धारणाएं तब भी मजदूरों को प्रभावित करती हैं। खनन श्रमिक हैं जो अर्थव्यवस्था में प्राथमिक समूहों के सदस्य होंगे। दूसरे एक समूह में कोयला निकालने वाले मजदूर हैं जो काम के बाद भी समूह में साथ होते हैं। खदान में कोयला श्रमिक शिफ्ट में काम करते है। इस तरह से व्यावसायिक समुदाय के रूप में विषेषतायें प्रगट होती हैं –

1. भौगोलिक एकांतता,
2. औद्योगिक एवं व्यवसायिक समरूपतायें

श्रमिकों को अपनी व्यावसायिक सुदृढ़ता को समान व्यवसायिक मूल्यों की प्रतिष्ठा को आत्मसात करना होगा। बाहरी अन्य पड़ोसी समुदाय में खनन की स्वनिर्मित छवि बनती है। इसमें कर्ता की उन्मुख्ता का भी स्थान है। विद्वानों का कहना है कि खान श्रमिकों को प्रबंधकों के प्रति धारणाएं हर प्रकार के मजदूर, 'ड्यूटी मैन' से जुड़ी हैं। श्रम मजदूरों की विलासिता है जिसमें प्रशिक्षित कुशल मजदूर व्यावसायिक प्रतिष्ठा और सामाजिक एकता से प्रकट होती हैं। इस तरह व्यावसायिक समूह के रूप में आदर्श प्रारूप (Ideal Type) के चार प्रतिरूप (मॉडल) पर व्याख्या का निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि यह एकांतिक जनसमूह और समरूपी दोनों प्रभावी पक्ष हैं। यह आदर्श प्रारूपण विशिष्ट हो सकता है। इसकी विशेषताएं देखें –

भौतिक अलगाव

अलग भौतिक अवस्थापना से कोयला खनन सेटलमेंट/बस्ती निवास स्थान माना जाता है। अपने पड़ोसी दूसरे स्थान से अलग का स्वरूप है, जहां नगरीयता को अपनाने का अवसर है। जनसंख्या को जो निश्चित रूप से अलग स्थान कोयला खान कालोनी प्रबंधन से बसाई गयी है।

खनन की आर्थिक बढ़त या प्रभुत्व

खान शुरू होने से वह स्थान अन्य उद्योगों पर वर्चस्व कायम हो जाता है क्योंकि उस क्षेत्र में रोजगार और नौकरी का बड़ा स्त्रोत खनन मजदूरी है। अधिक निर्भरता खनन को आर्थिक बढ़ोत्तरी देती है। कोयला खान सरकारी कंपनियां चलाती हैं जो पूंजीवादी उपक्रम भी है जिसमें खान की जमीनों पर आर्थिक उत्पादन निर्भर है। क्षेत्र में कोयला खाने, इनके अधिग्रहण और जमीन मुआवजा का प्रश्न, आर्थिक निर्णय लिए हुए जबकि इसमें बहुत सारे मजदूर काम करते हैं। कंपनी जो कोयला निकालती है, उनको मजदूरों की बस्ती का उचित इंतजाम यानि कॉलरी कॉलोनी भी बनाना और विकसित करना है।

कार्य की प्रकृति

खनिक का जीवन और उसका काम कठिन और जोखिम से भरा होता है। शिफ्ट में काम कोयला खानों में श्रमिकों व्यावसायिक रूप से कोयला श्रमिक कार्य से अनिश्चितता को बाहर निकालने का प्रयास भी करते हैं। कार्य प्रकृति में कोई दुर्घटना घटित होने की आशंकायें भी है। अलग–अलग कार्यों में जो स्किल्ड और अनस्किल्ड प्रकार से वर्गीकृत हैं उन्हें काम या पद का संतोष मिलता है तथा मजदूरी भी।

सामाजिक परिणाम

व्यवसायिक एवं अलगाव को भी एक तत्व माना जा सकता है जो मैनुअल श्रम को प्रबंध विभाग और दुकानों के सामाजिक स्थान में गतिशीलता का है क्योंकि काम के स्तर पर यह समरूपता से स्थानीय अलगाव या दूसरे उद्योगी आस्थान से अलगाव का पक्ष है। यहॉ कहना होगा कि क्या स्थिति है जो खनन श्रमिकों को यथावत निष्चित भौगोलिक गतिषीलता है। खनन का स्थान और खनन कार्य दोनों मजदूर को बॉध देते हैं। वैसा सामाजिक जीवन में समरूपता और एकांतिक (Isolated) की स्थिति पायी गयी है।

मनोरंजन क्रियायें

खनन श्रमिक नषा सेवन, स्पोर्ट्स, आदि से दूसरे मजदूरों से समीपता रखते हैं या एक साथ रहकर मनोरंजन करते हैं। यह आभासी रोमांच और अवकाष क्षण–क्रियायें भी एक सीमा तक समरूपता में बॉध देती है।

परिवार की भूमिका

कोयला श्रमिकों का परिवार कार्य, आराम, भागदौड़ की धुरी है। महिलाएं पहले खानों में काम करती थी तब वे अपने परिवार को बाहरी दुनिया से जोड़ देती थी। पिता के बाद पुत्र भी कोयला खान में मजदूर होगा यह अच्छा लक्ष्य होता है कि महिलायें अपने परिवार क्वार्टर और पड़ोस में समरूपता के तत्वों से एक जैसा दिखे संभवतः आर्थिक स्तर पर समान मजदूर वेतनभोगी भी "विश्व" प्रणाली का भाग है।

आर्थिक एवं राजनैतिक संघर्ष

पूँजीवादी समाज की नींव डालने में 19वीं शताब्दी से ही कोयला उद्योग संभव हुआ दूसरे औद्योगिक क्रान्ति भी कोयला उत्पादन से ही अग्रसर हुई। खनन मजदूर चाहे कि उन्हें अधिक मजदूरी दी जाये और अपने साथियों को खतरे के काम को करते हुये भी टिके रहना है। ट्रेड यूनियनें कोयला खान मालिकों को मजदूर के हक में संघर्ष करने में इच्छुक रहती हैं। राजनीतिक हित भी कोयला खान मालिकों का अस्तित्व बनाये रखने में कारक है। कम शोषण, मजदूरी, दुर्घटनायें, सौदेबाजी और समझौते की शक्ल में होती मौजूद है। खान मालिकों का संगठन और मजदूरों की ट्रेड यूनियन दो राजनैतिक जागरूकता से आर्थिक हितों को तय करने में हड़तालें सामान्य रणनीति है।

वर्तमान में कोयला खनन तकनीकी/प्रौद्योगिकी के प्रयोग से औद्योगिकरण के उन्नत चरण में पहुॅच चुकी है। अतः खनन उद्योग का विकास सामाजिक व्यवस्था में जनांकिकीय अलगाव का अस्तित्व (Mining Community) को इंगित करने में पर्याप्त सामाजिक तथ्यों को महत्व का है।

यह देखा जा सकता है कि पिछले सामाजिक–आर्थिक इतिहास में कोयला श्रमिक बड़ा कामगार समूह रहा है और यह देखने योग्य है। खनन क्षेत्रीय समाज को समाज के भीतर एकाकी जनसमूह (Isolated Mass) भौगोलिक एकांतता से खनन समाज दूसरे पड़ोसी समुदायों से अलग है। अपने रोजमर्रा के जीवन में मजदूर या कामगार भी अपनी गतिविधियों को कोयला खानों को लेकर सोचते और करते हैं। समाजषास्त्रीय रूप में एकांकी जनसमूह की धारणा भी एक मॉडल प्रस्तुत करती है।

अतः अलग से जन समूह कोयला कामगारों का है जो समरूपी और कम विभेदीकृत समूह है और सभी लोग जो कार्य करते हैं वह उनके खनिक के रूप में जिम्मेदारी संभालने का है इसलिये अनुमान भी एक जैसे और समान हैं। खनन कार्य दूरस्थ जंगल, पहाड़ों के अंचल में होता है, इसमें जनजातियाँ मजदूरी करती हैं (बस्ती का नाम जैसे मछुआरा बस्ती) कॉलरी के लोगों का कहना है कि मजदूरों की तानाषाही को पनपने का आधार खदान और इसका स्थान है यह मौलिक ठेठ आदर्षात्मक व्यवस्था मजदूर के सर्वहारा विकास में कोयला खानें बड़ा पड़ाव है, ट्रेड यूनियन से वर्ग चेतना विकसित करना जरूरी है।

खनिकों का सामाजिक जीवन कई प्रभावों से संयुक्त है, यथा –

1. अनिश्चितता से सम्बंधी कार्य या कार्य के अभाव की अनिश्चितता से सम्बंध,
2. कोई अनुमान लगाने की युक्ति (उत्पादन–श्रमिक),
3. आर्थिक वंचनायें (बिना वेतन कार्य, लॉकडाउन),
4. असुरक्षा (खान के भीतर),
5. पहचान का संकट (खान मजदूरों की सामाजिक उपस्थिति),
6. सीमान्तीकरण (मजदूरी से निम्न स्तरीय स्थिति),
7. जीवन अवसरों की ह्रासता या कमी (जोखिम, स्वास्थ्य आदि)
8. कोयला खनन, अनिश्चितता : कार्य के स्तर पर
9. समानता करने योग्य दशाएं, अनिष्चित, लोचयुक्त
10. नियमन और स्थायी, अवैध, आकस्मिक, अस्थायी, अनिश्चितता, अस्थिर, असुरक्षित, अभ्यस्त, स्थिर और

ज्ञात नये ढंग की, राजनैतिक इच्छायें, राजनैतिक इच्छाओं से अलग
11. पुरूष वर्चस्ववादी, नये विषयों की भूमिका से प्रगट योग्य, अर्थव्यवस्था में, योगदान परन्तु केन्द्रीय नहीं
12. पहचान स्थित और आबद्ध, पहचान लगभग तरल और कम ताकत युक्त

उदारीकरण और आर्थिक सुधार कार्यक्रमों का तीन दषकीय अनुभव हो चुका है। असंगठित श्रम क्षेत्र में बदलाव आया है। इस दौर में राजनैतिक यूनियनों के रास्ते भी बदलते रहे और विरोध का तरीका समझौते की शक्ल में उभरा। नये ढंग से विष्लेषण का औजार–"Precariat"*(Standing-2016, Johnson-2015)*

प्रायः खदान बंद होना, हड़तालें होने से खनिक अनिश्चितता की लपेट में आ जाते हैं। दूसरी अनिश्चितता एक खदान बंद से दूसरी खदान में स्थानांतरित होना। अलग–अलग हुए खनन समुदायों की स्थितियां देखें –
1. भूमिगत खदानों के जनसमूह के जैसा जीवन,
2. एकता बनाये रखना,
3. पुनः गरीबी बढ़ने का खतरा,
4. बाहरी गतिशीलता : खदान क्षेत्र में कम।

21वीं सदी में ऐसे कार्य क्षेत्र हैं जहां अनिश्चितता वाले कार्य तरीके का पीछा नहीं छूटा। पूंजीवाद ने चोला बदल लिया और श्रम के शोषण का तरीका भी। यहॉ समूह की भूमिका है। जो जन पर्यावरण के नाम पर कोयला खानों को प्रश्न चिन्ह लगाते हैं। कार्बन उत्सर्जन, ग्लोबल वार्मिंग ने पूँजीवाद की धारणा बाजारवाद में परिणाम माना जा सकता है। गैस की और अधिक ऊर्जा उत्पादन कोयले पर निर्भरता के कम करने पर जोर राष्ट्रीय ऊर्जा नीति में दिया जा रहा है।

'पिट' विलेज की अवधारणा को खानों के क्षेत्र हैं, जहां खाने कोयला उगलती है। खानों से कोयला निकालने के बाद खदान बंद होनी है। यह प्रक्रिया सभी कोयला खदानों में होती रही है। इसमें अनिश्चितता होती है, दुर्घटना के भी अधिक घटनाओं के आधार पर खान बंद किया जाना है। ऐसी स्थिति में रोजगार खान श्रमिकों की दशाएं बदलता है।
1. व्यक्त साधनहीनता और खान मजदूरों के सामने काम की कमी,
2. ध्रुवीकरण, खनन के स्थानीय कारकों का ध्रुवीकरण,
3. अलगाव, एकांतता

ऊपरी तीनों तथ्यों 'Precariousness without work' खाली बैठे कोयला मजदूरों के संदर्भ में स्थिति का प्रतीक है। बहुत सारे औद्योगिक श्रमिकों में से कोयला खानों के अधिक मजदूर हैं। इधर बड़े पैमाने में उत्पादन की प्रक्रिया खदानों से होती है। यह फैक्ट्री उत्पादन से एकदम अलग है इसलिए खदान मजदूरों की हड़ताल, प्रतिरोध के तरीके, और काम से अनुपस्थिति का पैमाना फैक्ट्री उत्पादन से अलग है। खदान मजदूर बेलचा और हैंडलेम्प लेकर भूमिगत खदान में उतरता है।

भारत की श्रम स्थिति और श्रम बल के विभाजन को देख सकते हैं –

सारणी–1.0

कामगार वर्ग (2001)	Main Workers (Lacs)	(%)
कुल मुख्य कर्मकर	3,12,972	100.00
कृषि कर्मकर	1,76,979	56.6
खनन, खदानों के काम	1,908	0.6
निर्माण	41,848	13.4
बिजली, गैस, जल सप्लाई	1,546	0.5
होलसेल, रिटेलर्स, रिपेयर, होटल रेस्तरां	29,333	9.4
ट्रांसपोर्ट, स्टोरेज, कम्यूनिकेषन	12,535	4.0
रियल स्टेट, वित्तीय सेवायें	6,109	2.0
अन्य सेवायें	31,131	10.0

आंकड़ों से पता चलता है कि खान श्रमिक इत्यादि 19 लाख 8 हजार या 19 लाख के करीब थे। यह चार प्रकार की गैर कृषि सेवा क्षेत्र के श्रम बल से पीछे हैं अर्थात रियल स्टेट कम्युनिकेशन, होलसेल, रिटेलर, बिजली, गैस, वाटर सप्लाई के श्रमबल से पीछे और या कहीं बराबर है जैसा बिजली, गैस की सेवाओं के समान 0.5 से 0.6%।

यह कहा जाता है कि बहुत से कस्बे और नगर कोयला खान के लिए जाने जाते हैं। भारत के धनबाद, झरिया और रानीगंज को 'कोयला राजधानी' कहा जाता है, जहां भारत का दो तिहाई कोयला निकलता है। वर्तमान में यहॉ ईस्टर्न कोलफील्ड की संचालित खदान है। यह लगभग 500 पिट है जिससे कोयला निकाला जाता है। इस क्षेत्र में भी दुर्घटनाएं होती रहती हैं। माफिया राज, अवैध कोयला खनन, अधिकारियों का भ्रष्टाचार, अपराध, बेरोजगारी, ठेका श्रमिकों का शोषण कुप्रबंध भी है।

मोजमिर हॉजेक (Mojmir Hajek) ने खनन कामगारों के बारे में समाजशास्त्रीय के तौर पर माना है जो 60–70 के दशक में सर्वे किया गया था (1964–66)। खनिकों की शारीरिक कुशलता और प्रदत्त मशीनी उपकरणों को उनके जीवन से जोड़ा जा सकता है। विशेष तौर पर खदान के भीतर काम करने का मुख्य कार्य है। अपने काम के बारे में खनिक क्या सोचता है ? यह

जानना महत्वपूर्ण है जिन कामों में कोयला खदान उत्पादन लक्ष्य पूर्ण करते हैं या अधिक कोयला उत्पादन के लिए प्रोत्साहन पुरस्कारों का वितरण और प्रमोशन किया जाता है।

खनन श्रमिक दूसरे अन्य व्यवसाय, उद्योग के कार्य के प्रति इच्छुक नहीं रहते हैं। खनिकों को कामगार एकता के लिए 'निकाय' मानेंगे क्योंकि खनन एक जोखिम भरा कार्य है जिसमें सभी श्रमिक परस्पर सुदृढ़ता से जुड़े रहते हैं। अधिकतर मशीनों से पिट के भीतर काम करने के कारण सामाजिक सुदृढ़ता है। खदान श्रमिक 'अनिश्चितता' को मनोवैज्ञानिक ढंग से महसूस करते हैं। उन्हें अनुभव और मनोविज्ञान दशाओं का उसी परिवेश में करना होता है। खानों का राष्ट्रीयकरण हो जाना परिवर्तन लाया है। व्यवसायकर्ता के रूप में श्रमिक की कोयला ऊर्जा की जरूरत है और राष्ट्रीय आय बजट वित्तीय मामलों में सबसे ऊपर नाम है। शायद कृषि उत्पादन की जगह कोयला उत्पादक देशों में पहला नाम। यद्यपि कोयला उत्पादक देशों में भारत तीसरे स्थान पर है।

कोयला खान का पता लगाने और उसके भंडारण क्षमता के लिए भू–भौतिकीय जियोलॉजिकल डिपार्टमेंट सर्वे करते हैं। जियोलॉजिकल सर्वे ऑफ इंडिया की जिम्मेदारी प्रदेशों के खनिज प्रचुरता वाले इलाके में भूगर्भीय सर्वेक्षण करना है। अन्य खनिजों की तुलना में कोयला भंडार के सर्वेक्षण राष्ट्र की संपदा में वृद्धि की संभावना और झलक है। इसके लिए राष्ट्रीय खनिज नीति बनी है। नवीनतम 2016 की भारत की खनिज नीति लागू हुई। वित्तीय आर्थिक फिजिबिलिटी का उद्देश्य राष्ट्र को कोयला के मामले में आत्मनिर्भर बनाना है। कई राज्यों में माइनिंग एवं मिनरल डेवलपमेंट कारपोरेशन गठित है। नेशनल कोल डेवलपमेंट कारपोरेशन कोयला खान के राष्ट्रीयकरण पूर्व गठित किया गया बोर्ड (1965) था। बाद में 1972 में कोयला क्षेत्र में 8 कोयला कंपनियां बनाई गई जो कोल इंडिया लिमिटेड के अधीन संचालित है। कोयला उत्पादन प्रक्रिया तकनीकी या प्रौद्योगिकी पूँजी और मजदूरों के जरिए उत्पादन करती है। तीनों जरूरी है, प्रौद्योगिकी समय और धन की बचत वाली हो। श्रम बल तकनीकी उत्पादन प्रक्रियाओं में प्रायः अधिक ग्राहय हैं। पूँजी की तैयारी जोखिम सहित धन का निवेश किया जाता है। कोयला नीलामी में खुली निविदाएं या बोली का चलन है जो बाजार में इसकी पूछपरख और खपत के आकलन से तय होता है। औपनिवेशिक काल की श्रम व्यवस्था में दासता–श्रम और दासता–रूप में महिलाओं की कार्य में संलग्नता कोयला खानों के औपनिवेशिक ढांचे में ऐतिहासिक रूप से मौजूद रही है। ब्लू कॉलर मजदूरी कार्यों में महिलायें नियोजित होती थी। खासतौर से पुलिस, वन विभाग, शिक्षक आदि के अलावा कारखानों में काम करने में भी। कोयला खनन क्षेत्र में निवासी मजदूरों की सांस्कृतिक दुनिया बाहरी दुनिया से अलग है।

खान श्रमिकों के जीवन पक्ष सामने पृथक भी हैं–

1. समाज की नजर में खनन कर्ता क्या है ? उनकी आमदनी, अलग जोखिम पूर्ण कार्य अथवा व्यवसाय पद क्रम में निचले स्थान का ज्ञान,
2. स्वयं कोयला श्रमिक अपने पेषे और कार्य में कैसी छवि बनाता है?
3. खनन कर्ता की अपनी मानसिकता जो उसके पेषे से उभर कर आती है, कैसी है?

खनन कार्य संगठन का समाज पर प्रभाव और समाज का स्थानीय खनन क्षेत्र के बारे में विचार तथा प्रभाव जो कामगारों के जरिए विकसित हुआ उल्लेखनीय है। ब्रिटिश समाजषास्त्र में कोयला श्रमिकों के कार्यों का नृतत्वशास्त्र और इतिहास के मुद्दों को शामिल कर अध्ययन परंपरा मिलती है।

द्वितीय विश्व युद्ध के बाद के ब्रिटिश श्रमिक इतिहास विशेषकर हड़ताल की गहराई से देखा गया किस प्रकार ट्रेड यूनियन की मजबूती का प्रभाव सरकार और कोयला कंपनियों को सामना करना था। ब्रिटेन में (जिम फिलिप्स–2017) 1947 से 1980 के बीच कोयला उद्योग सिकुड़ रहा था। बेरोजगार हो रहे कोयला श्रमिकों का जीवन भी उद्योगों के ठहराव का असर कोयला श्रमिकों का विशेषकर महिला कोल श्रमिकों के काम से बैठने की कोयला खाने दुर्घटनाओं के दौर से बाहर नहीं रही है, ऐसी दुर्घटना मृत्यु और जख्मों को श्रमिकों को देती हुई जांच कार्यवाही सुरक्षा नियमों का कड़ाई से पालन करने का भरोसा दिलाते हैं। दुर्घटना से किसी भी कोयला खान श्रम बल पर मनोवैज्ञानिक असर पड़ता है। दुर्घटना उपरांत कोयला खानों में व्यवसाय का चक्र कोयला उत्पादन का उतार–चढ़ाव और स्थानीय समुदाय की सामाजिक अंर्तक्रिया तथा स्थानीय राजनीति का हिस्सा और केंद्र भी कोयला खान ही बनते हैं। व्यवसाय कार्य में सुरक्षा और दुर्घटनाएं रोकने में तकनीकी स्थानांतरण होना जरूरी है।

कोयला खानों की तरह अफ्रीकी देषों में उदाहरण सोने के उत्खनन का है, जहां हड़तालें और उत्पादन में गिरावट का दौर चलता रहा। खनन के अर्थशास्त्र का विस्तार छोटी खदान, खनिज पट्टों वाले कई खनिजों के व्यापार का है राष्ट्रीय खनिज पॉलिसी में सूचीबद्ध हैं। खनिक गरीब और बदहाल जीवन खाना–बदोशी जीवन जीते रहे हैं। जैसे शोषण की परिस्थितियां मजदूरों की बस्ती में देखने से पता चलता है। विषेषकर पत्थर तुड़ाई की खदानों में खनिक शोषणकारी की दषा में रहते हैं। खानों के संचालन के कानून बने हैं यहाँ तक कि खान मजदूरों को बस्ती में बसाया जाता है। इन मजदूरों की अपने समुदाय के नृजातीय, जातीय सूत्र भी पनपता है और यह सूत्र मोटे तौर पर कोयला मजदूरों में सामाजिक एकता और सुदृढ़ता पैदा करता हैं। आधुनिक दौर में पूंजीवादी व्यवस्था, शहरी वृद्धि, और राष्ट्रवाद के संदर्भ में कोयला उद्योग एक छवि है। अधिकांश बड़े कोयला उत्पादक देशों में लोकतंत्र है और खानों का सरकारी करण है। इस दृष्टि से खनन और समाज का विकास क्रम है।

दुनिया भर में कोयला खानों के मजदूरों पर सरकारों का ध्यान गया है। खासतौर से जब खान में दुर्घटना हो जाए तो संचार माध्यमों से पता मिलता है, दूसरे बदलाव कंपनियों का मालिकाना हक है और नई कंपनियों का प्रबंधन लागू है तो पर्यावरण और आर्थिक

मामले भी नए ढंग से तय होने लगते हैं। उत्पादन, आर्थिक व्यवस्था और समाज में कोयला उत्पादन कर्ताओं का समाजशास्त्र पश्चिमी समाजशास्त्रीय विचारधारा में रहा है। एक विशिष्ट हैसियत के साथ उद्योग और समाज के रिश्ते को तय करता है। ऐसे शहर जिनको कोयला खानों का गांव कहा जाता है। उनका अध्ययन और खान के मजदूरों की अपनी बस्ती का जीवन दैनिक दिनचर्या जानना आवश्यक है। कपड़े कोयले की राख में सने हुए, बेलचे और हैंड लैंप लगाए जब खान मजदूर खान में उतरते हैं तो उनके वापसी में सुरक्षित बाहर आ जाने का संतोष है। खनन और समाज पर ध्यान देना चाहिए, क्योंकि 200 साल के लगभग इस पुराने उद्योग–धंधे में बहुत बदलाव हुये है और सामाजिक परिवर्तन भी उतना आया है। जिस समाज में खनिक रहते है, वह समाज भी अध्ययन का केन्द्र बिन्दु हो।

अंत टिप्पणी

1. *"Mine workers constitute group of workers who are exploited and experiences of exploration in an existence through performing alienating labour the samples value of which is enjoyed by the capitalist enterprenuer who undertook mining development in the first place." ….M. Bulmer : 1975.*
2. *"An isolated mass can be kept from internal solidarity not only by the turnover of its membership but also by racial, religious and relationality barrier." …….Bulmer M. 1975 : 69.*
3. *"Work is difficult and arduous depends on unpredictable natural conditions and the close corporation of groups of work mates and require great physical extensions it is a participating dangerous industry in which to work and accident and even death under group are within experiences of most miners."…….Bulmer M., P. 72.*
4. *"An occupational community may be said to exit where the social relations of work (Commanly carried on in solidarity work group) carry over into non-work activity." …….Bulmer M. 1975, P.79*
5. *"An occupational communities tend to to be relative self enclosed such an occupational culture is often symbolized by a disinactive occupational language."*
6. *"The pure capitalist mining community is therefore a company town in which the company is a party to all the principal economic transaction carried on within it." …….Bulmer M. 1975, P.85*
7. *"The traditional mining community is characterized by prevelance of communal social relationships among miners and their family which are multiplex in form" P.87*
8. *"Mine workers constitute a group of workers who are exploited and experience exploitation in an extreme form as such miners are a district and important groups within the working class as a whole, characterized both by the extreme conditions under which they are required to labour and by the solidarity which they display towards employers and the outside world." …….Burnell G. : 2017*
9. *'Precariat'is a social class formed by people suffering from precarity which is conduction of existence without predictability or security affecting material or phychological welfare. The term is a portmantea obtained by marging precarious with proletariat. …….Wikipedia*
10. *Precariat: People whose employment and income are insecure, especially when considered as a class most of those in the precariat are just trying to create a meaningfull for themselves.*
11. *"Mining is a process composed of three logical interacted and sequential faces exploration, development and production others unique risk economic consideration and constant it charactersies each stage."……. Richard Goday.*

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. *Ad Knotter, Migration and Ethicity in Coalfield History : Global Persepectives, Int.Review of Social History, Oct.2015.*
2. *Clinton E.Jenks, Social Status of Coal Miners in Britain Nationalization, The American Journal of Economic and Sociology, 1967.*
3. *Damitryi Kuzenestov, Nadeza Rabkinva (2019), Coal Mining Industry as a forming factors of Social Cultural &Linguestic Environment of Kuzbass as Resource Region of Siberia, 35 Web Conterences 105/04040. movative Mining Symposim.*
4. *Dennis Warwick, Coal Capital and Culture Sociological Analysis of Mining Community in West Yorkshire, 1992, Routledge.*
5. *Eileen Mountjoy, Ernest: Life in a Mining Town.*
6. *Gay Samual Solomon, The Living Standard of Tyneside Coal Miners, 1836-1962, MSC Research dissertation, 2014, Univesity of Yorkshire, U.K.*
7. *Gibson Burrell, The Role of Coal Mining Towns in Social Theory : Past, Present and Future, Global Discourse, 2017, 7(4).*
8. *Graham Davis A., Extractive Economics growth and the poor.*
9. *ILO : Productivity and its Impact on Employment and Labour Relations in the Coal Mining Industry, 1995, Thirteenth Session, Geneva.*
10. *Jim Phillips, The meaning of Coal Community in Britain Since 1947, Contemporary British History, 2017, 32 (39-59).*
11. *Jim Strangleman, Mining a productive Team? The Coal Industry Community and Sociology, Comt.British History -32.*
12. *Jim Strangleman, Work & Society, Routledge, 2008, UK.*
13. *Karakaya Emasab, Social Sciences and the Mining Sector: Some insights into recent research trends, Resource Policy-58, 2018, 257-267.*
14. *M.I.A.Bulmer, Sociological Model of the Mining Community, The Sociological Review, 1975.*
15. *Mojmir Hajek, Miners Work : A Sociological Outline, Brnenske University, 1968, G-12*

16. *Murphy John (1989), Community & Struggle: A Sociological Study of a Mining Villages in the 1980's Ph.D.Thesis, University of Warwick.*
17. *Murphy John, Community and Struggle: A Sociological Study of a Mining Village with 1980's Ph.D.Thesis, Warwick.*
18. *Norman Dannis, Coal is our life: Analysis of a York Shire Mining Community, 1969.*
19. *Parez Sindiu Lopez, Mining and Community: A Sociological Study on the Social Impact of Large Scale Mining Disseratation Thesis.*
20. *Philip Crowson, The Resource Course: A Modern Myth? Springer, 2016.*
21. *Richard Brown, John Child & London Unwin, The Sociology of Industry, 1974.*
22. *Richard Goday, Mining: Authropological Perspectives, Annual Review of Aulbro-pology, 1985, 14, 199-217.*
23. *Richards Geremy- Mining, Society and a sustainable world, 2010, Springer.*
24. *Richards Jeremy (Ed.) Mining Society and a Sustainable Ward, 2018, Springer.*
25. *Rosenberg (1957), Occupations & Values, Chicago.*
26. *Saloman G., Community & Occupation, 1974, Cambridge University Press.*
27. *Steven L.Sewell, Life away from the Mine in Oklahomas Coal Town, 1992.*
28. *Suzanne E. Tallichet, Gendered Relationship in the Miners and Divison of Labour Undergroup, Gender & Society, 9(6), 1995.*
29. *The Conversation: Lessons Learnt from taking sides as a Sociologism in unjust times by Edward Webster, 2016, June 6th.*
30. *Theo Nichols Death and hungry at work: A Sociological Approch, Health & Work, pp.86-106.*
31. *V.Munnik, The Social and Enviromental Cocequences of Coal Mining in South Africa : A Case Study, Jan., 2010, Amsterdam.*
32. *Vanessa Petkova et.al.(2009), Mining development and Social Impact on Communities : Bowen Basion Case Studies, Rural Society, 2009, 19:3, 211-228.*